

ग्रे स्लेंडर लोरसि

हाल ही में कोयंबटूर में सलीम अली सेंटर फॉर ऑरनथोलॉजी एंड नेचुरल हसिट्री (SACON) के वैज्ञानिकों ने तमलिनाडु के डडिगुल वन प्रभाग में ग्रे स्लेंडर लोरसि की एक आबादी का सर्वेक्षण किया।



ग्रे स्लेंडर लोरसि:

परिचय:

- ग्रे स्लेंडर लोरसि, **लोरिडे (Loridae)** परिवार से संबंधित प्राइमेट की एक प्रजाति है।
- लंबे और पतले अंगों, बड़े कान, नुकीले थूथन व आँखों वाले काले या गहरे भूरे रंग के एक दुबले-पतले रूप में दिखाई देता है।
 - इसके बाल नरम और ऊनी होते हैं। यह गहरे भूरे से लेकर धूसर जैसे विभिन्न रंगों में पाया जाता है।
- स्लेंडर लोरसि एक रात्रिचर जानवर है जो अपना अधिकांश जीवन वृक्षों पर व्यतीत करता है। ये धीमी और सटीक गतिके साथ शाखाओं के शीर्ष पर घूमते रहते हैं। यह धीमी गति से चलने वाला जानवर भी है। यह भोजन करने के लिये झाड़ियों में उतरता है और ज़मीन के खुले हिस्सों को पार करके एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक जाता है।
- हालाँकि यह कीटभक्षी के साथ जामुन का भी शौकीन है।

आवास:

- ये उष्णकटिबंधीय वर्षावनों, झाड़ीदार जंगलों, अर्द्ध-परणपाती वनों और दलदली भूमि पर पाए जाते हैं।
- ग्रे स्लेंडर लोरसि तमलिनाडु के डडिगुल ज़िले के सूखे और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में रहते हैं।
 - यह बबूल और इमली के झाड़ीदार जंगलों में पाया जाता है।
- यह प्रजाति दक्षिणी और पूर्वी भारत (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल व तमलिनाडु) तथा श्रीलंका में पाई जाती है।

प्रकार:

स्लेंडर लोरसि की दो प्रजातियाँ हैं, जो 'लोरसि' जीनस (वर्ग) के सदस्य हैं:

- **रेड स्लेंडर लोरसि** (लोरसि टारडगिरैडस)
- **ग्रे स्लेंडर लोरसि** (लोरसि लडिकेरथानस)

संकट:

- मुख्य रूप से निवास स्थान के नष्ट होने के कारण लोरसि के लिये संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है।
- बबूल के पेड़ (**Acacia Tree**) का विलुप्त होना जो कलोरसि के एक पसंदीदा पेड़ की प्रजाति है, पालतू व्यापार और उनके मांस के लिये शिकार, सड़क दुरघटना, अंधविश्वासी प्रथाओं के कारण इनकी हत्या, पारंपरिक चिकित्सा व आवास का वनाश इस प्राइमेट के लिये गंभीर खतरा पैदा करते हैं।

संरक्षण स्थिति:

- **IUCN:** नकिट संकटग्रस्त

- [CITES](#): परशिष्टि- II
- भारत का वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972: अनुसूची- I

सलीम अली सेंटर फॉर ऑर्नथोलॉजी एंड नेचुरल हिस्ट्री (SACON):

- SACON वर्ष 1990 में अनाइकट्टी, कोयंबटूर (तमलिनाडु) में स्थापति, भारत में पक्षीवज्जान और पराकृतकि इतहिास में सूचना, शकिषा और अनुसंधान के लयि एक राष्ट्रीय केंद्र है ।
- भारत में पक्षियों की प्रजातियों और पराकृतकि संसाधनों के संरक्षण हेतु उनकी आजीवन सेवाओं की सराहना में डॉ. सलीम अली के नाम पर इसका नाम रखा गया था ।
- यह जैव वविधिता और पराकृतकि इतहिास के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए पक्षीवज्जान में अनुसंधान को डिज़ाइन और संचालति करता है ।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/grey-slender-loris>

